Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5541Online

WRITERS CREW INTERNATIONAL RESEARCH

JOURNAL

सोशल मीडिया का युवाओं की पहचान निर्माण पर प्रभाव

डॉ. कमल पाण्डेय

डैबहैंड असाइनमेंट वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक

शैक्षिक सलाहकार

दिल्ली

Vol. 1, Issue: 6, August 2024

Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5541Online

सार

इस अध्ययन में किशोरों की पहचान निर्माण और सोशल मीडिया उपयोग के बीच जटिल संबंधों का पता लगाया गया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने आज के डिजिटल रूप से जुड़े समाज में युवा लोगों की खुद की धारणाओं और उनके आसपास की दुनिया के साथ बातचीत को आकार दिया है। अध्ययन इस घटना की जांच करने के लिए दो महत्वपूर्ण पैमानों- पहचान विकास पैमाने के आयाम और सोशल मीडिया की लत पैमाने का उपयोग करता है। पहला यह मापता है कि किशोर सोशल मीडिया का कितना और कितनी बार उपयोग करते हैं, जबकि दूसरा पहचान विकास के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करता है, जैसे प्रतिबद्धता, अन्वेषण और पुनर्विचार। शोध का लक्ष्य इन उपायों का उपयोग करके एकत्र किए गए डेटा के विश्लेषण के माध्यम से उन जटिल तरीकों की पहचान करना है जिनसे सोशल मीडिया किशोरों की पहचान निर्माण को प्रभावित करता है। यह पहचान के विभिन्न पहलुओं के उद्भव और विशेष सोशल मीडिया उपयोग की आदतों के बीच संबंध खोजने का प्रयास करता है। इसके अलावा, शोध इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करता है कि किशोर अपनी पहचान बनाने और संप्रेषित करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कैसे करते हैं। वर्तमान परिवेश में, जहाँ डिजिटल

Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5541Online

प्रौद्योगिकियाँ युवा लोगों के जीवन में अधिकाधिक एकीकृत होती जा रही हैं, यह समझना आवश्यक है कि सोशल मीडिया किशोरों की पहचान के निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करता है। शोध का लक्ष्य डिजिटल युग में स्वस्थ पहचान निर्माण को बढ़ावा देने की चुनौतियों के बारे में नीति निर्माताओं, अभिभावकों और शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए इस संबंध पर प्रकाश डालना है।

परिचय

किशोरों में पहचान का निर्माण

किशोरावस्था के चरण में मन, शरीर और भावनाओं का कायापलट होता है। यह अन्वेषण, स्वायत्तता निर्माण और नई भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के अधिग्रहण की अवधि है, जैसा कि अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA) द्वारा परिभाषित किया गया है।

ए. जे. जर्सिल्ड के अनुसार, किशोरावस्था बचपन से वयस्कता तक की यात्रा है, जिसमें मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक परिवर्तन शामिल हैं। डॉर्थ रोजर्स कहते हैं कि यह केवल एक अवधि नहीं है, बल्कि प्रभावी सामाजिक भागीदारी के लिए आवश्यक दृष्टिकोण और विश्वासों को विकसित करने की एक प्रक्रिया है।

किशोरों में पहचान का निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि ये व्यक्ति स्वयं की एक सुसंगत भावना का निर्माण करने और समाज के भीतर अपना स्थान बनाने के लिए उत्सुकता से प्रयास करते हैं।

इस रहस्यमय विषय पर व्यापक शोध किया गया है, जिसमें किशोरों की पहचान के विभिन्न पहलुओं पर कई अध्ययन किए गए हैं। डिजिटल जुड़ाव और पहचान विकास के बीच जटिल अंतःक्रियाओं का पता लगाने के लिए, यह शोध पत्र पहचान विकास पैमाने के आयाम और सामाजिक मीडिया उपयोग पैमाने जैसे पैमानों का उपयोग करता है ताकि सामाजिक मीडिया के उपयोग और किशोर पहचान गठन के बीच बहुआयामी संबंधों की जांच की जा सके।

स्वस्थ किशोर विकास को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों में शिक्षकों, माता-पिता और नीति निर्माताओं का समर्थन करने के लिए, इस अध्ययन का उद्देश्य इस बात की गहरी समझ में योगदान देना है कि कैसे सोशल मीडिया आज के किशोरों की पहचान के प्रक्षेपवक्र को आकार देता है।

1. **एरिकसन का मनोसामाजिक सिद्धांत**: एरिक एरिकसन ने मनोसामाजिक विकास का एक चरण-आधारित मॉडल पेश किया, जिसमें कहा गया कि किशोरावस्था पहचान बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है। एरिकसन के अनुसार, किशोरावस्था की अवस्था पहचान बनाम भूमिका भ्रम के मनोसामाजिक संघर्ष को सामने लाती है, जिसमें व्यक्ति विभिन्न भूमिकाओं का पता लगाते हैं और पहचान की दृढ़ भावना को विकसित करने का प्रयास करते हैं।

2. **मार्सिया की पहचान स्थितियाँ**: जेम्स मार्सिया ने चार पहचान स्थितियाँ प्रस्तुत करके एरिक्सन के सिद्धांत का विस्तार किया, अर्थात् प्रसार, फौजदारी, स्थगन और उपलब्धि। प्रसार अन्वेषण और प्रतिबद्धता की कमी को दर्शाता है, फौजदारी अन्वेषण के बिना पहचान को

अपनाना है, स्थगन प्रतिबद्धता के बिना सक्रिय अन्वेषण को दर्शाता है, और उपलब्धि संकल्पित और प्रतिबद्ध पहचान की प्राप्ति को दर्शाता है।

3. **संज्ञानात्मक विकास और पहचान:** **संज्ञानात्मक क्षमताएँ किसी की पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जीन पियागेट का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत किशोरावस्था के दौरान ठोस परिचालन सोच से औपचारिक परिचालन सोच में संक्रमण पर जोर देता है। यह संज्ञानात्मक बदलाव व्यक्तियों को अमूर्त तर्क में संलग्न होने, काल्पनिक परिदृश्यों पर विचार करने और अपनी पहचान के विभिन्न पहलुओं का पता लगाने में सक्षम बनाता है।**

4. **पारिवारिक प्रभाव:** **पारिवारिक परिवेश किशोर पहचान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता के प्रति लगाव, पालन-पोषण की शैली और परिवार इकाई के भीतर संचार के पैटर्न विविध पहचान क्षेत्रों के अन्वेषण और प्रतिबद्धता को प्रभावित करते हैं। पहचान निर्माण के संदर्भ में सहायक और आधिकारिक पालन-पोषण शैलियों को सकारात्मक परिणामों के साथ जोड़ा गया है।**

5. **सहकर्मी संबंध:** सहकर्मी पहचान के विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं। किशोर अक्सर सहकर्मी समूहों के भीतर पहचान की खोज करते हैं, अपने साथियों से स्वीकृति और पुष्टि की लालसा रखते हैं। सहकर्मी संबंध विभिन्न पहचानों के साथ प्रयोग करने, प्रतिक्रिया प्राप्त करने और अपनेपन की भावना विकसित करने के अवसर प्रदान करते हैं।

6. **सांस्कृतिक और जातीय पहचान:** सांस्कृतिक और जातीय पृष्ठभूमि किशोर पहचान के निर्माण पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले व्यक्ति कई सांस्कृतिक पहचानों को अपनाते हैं और अपनी विरासत को प्रमुख संस्कृति के साथ समेटने में अनूठी चुनौतियों से जूझते हैं। जातीय पहचान के विकास में अन्वेषण, संघर्ष समाधान और कई सांस्कृतिक पहचानों का एकीकरण शामिल है।

7. **स्कूल और शैक्षिक संदर्भ**: स्कूल पहचान के विकास में समाजीकरण के महत्वपूर्ण एजेंट के रूप में कार्य करते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि, पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी और शिक्षकों और साथियों के साथ बातचीत शैक्षणिक और सामाजिक दोनों पहचानों के निर्माण में योगदान

करती है। स्कूल का माहौल और आत्म-अभिव्यक्ति और स्वायत्तता के अवसर सकारात्मक और एकजुट पहचान के विकास को प्रभावित करते हैं।

सोशल मीडिया और उसका प्रभाव

वेबसाइट और एप्लिकेशन जिनका उपयोग आप अपनी सामग्री साझा करने के लिए कर सकते हैं, उन्हें सोशल मीडिया कहा जाता है। आप सोशल मीडिया पर अन्य लोगों द्वारा साझा की गई सामग्री का उत्तर दे सकते हैं। इसमें टेक्स्ट, चित्र, अधिक जानकारी के लिए लिंक और अन्य लोगों के योगदान पर टिप्पणियाँ या प्रतिक्रियाएँ शामिल हो सकती हैं।

कई लोगों को सोशल मीडिया साइट्स पर ऑनलाइन शेयरिंग के ज़रिए नए लोगों से जुड़ना या पुराने लोगों के संपर्क में रहना आसान लगता है। और अन्य आयु समूहों की तुलना में, किशोरों को यह ज़्यादा महत्वपूर्ण लग सकता है। दोस्ती किशोरों की पहचान बनाने में योगदान देती है और उन्हें समर्थित महसूस कराती है। यह विचार करना उचित है कि बच्चों के सोशल मीडिया के उपयोग का क्या प्रभाव हो सकता है।

कई युवा अपने दैनिक जीवन में सोशल मीडिया का बहुत ज़्यादा उपयोग करते हैं। किस हद तक?

13 से 17 वर्ष की आयु के किशोरों पर 2022 में किए गए एक अध्ययन से संकेत मिलता है। लगभग 1,300 उत्तर प्राप्त करने वाले एक सर्वेक्षण के अनुसार, 35% किशोर दिन में कई बार से ज़्यादा पाँच सोशल मीडिया साइट्स में से कम से कम एक का उपयोग करते हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, यूट्यूब और टिकटॉक पांच सोशल मीडिया नेटवर्क हैं।

सोशल मीडिया और रिश्ते

एक बहुत ही हानिकारक चिंता यह है कि क्या सोशल मीडिया का उपयोग मूल्यवान आमने-सामने के समय को ले रहा है; यह एक ऐसी घटना है जिसे "**सामाजिक विस्थापन**" कहा जाता है। सामाजिक विस्थापन के बारे में चिंताएँ टेलीफोन जितनी पुरानी हैं और शायद उससे भी पुरानी हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैनसस के रिलेशनशिप और टेक्नोलॉजी लैब के निदेशक, जेफ़री हॉल, पीएचडी के अनुसार, "विस्थापन का यह मुद्दा 100 से अधिक वर्षों से चला आ रहा है।" हॉल के अनुसार, "एक सांस्कृतिक मान्यता है कि हमारे करीबी दोस्तों और परिवार के साथ आमने-सामने के समय की जगह तकनीक ले रही है, चाहे कुछ भी हो।" हॉल के शोध में उस

सांस्कृतिक मान्यता की जाँच की गई है। एक अध्ययन में प्रतिभागियों ने उन हफ़्तों में 19 अलग-अलग गतिविधियों के लिए अपनी दैनिक गतिविधियों को रिकॉर्ड किया जब उन्हें सोशल मीडिया का उपयोग करने से मना किया गया और नहीं किया गया। लोगों ने उन हफ़्तों में काम करने, सफाई करने और घर के कामों को संभालने में ज़्यादा समय बिताया जब उन्होंने सोशल मीडिया का उपयोग करने से मना किया। हालांकि, इन समान संयम अवधियों के दौरान लोगों ने अपने सबसे करीबी सामाजिक संबंधों के साथ सामाजिक रूप से जितना समय बिताया, उसमें कोई बदलाव नहीं आया। अंतिम शब्द? हॉल के अपने शोध के साथ-साथ अन्य लोगों के लेखन के अनुसार, "मेरा मानना है कि इस बात के बहुत कम सबूत हैं कि सोशल मीडिया सीधे तौर पर करीबी संबंध वाले भागीदारों के साथ सार्थक बातचीत को विस्थापित करता है।" तथ्य यह है कि हम अक्सर अपने करीबी दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ टेक्स्ट, ईमेल, फोन कॉल और व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से संवाद करते हैं, इसका एक कारण हो सकता है (ली, एस. वाई, 2018) [1]।

[1] ली, एस. वाई., किम, एच., किम, जे. एच., किम, वाई. जे., और हान, एस. (2018)। सोशल मीडिया का उपयोग, शरीर की छवि और मनोवैज्ञानिक कल्याण: कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका की क्रॉस-सांस्कृतिक तुलना। जर्नल ऑफ हेल्थ कम्युनिकेशन, 23(10-11), 870-877।

ISSN: 3048-5541Online

किशोर

जब किशोरों की बात आती है, तो ब्रिजेट क्रिस्टीन मैकल्यू (मनोविज्ञान विभाग, सेंट्रल फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, ऑरलैंडो, फ्लोरिडा, यूएसए) द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि PTSD के लक्षण स्पष्ट सामग्री, साइबरबुलिंग और यौन प्रलोभनों के संपर्क में आने से ट्रिगर होते हैं, लेकिन सूचना उल्लंघन से नहीं। इसके अतिरिक्त, विश्लेषणों से पता चला है कि जोखिम के प्रकार या आवृत्ति से स्वतंत्र, किशोर जो पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर का अनुभव करते हैं, वे सक्रिय और संचारी मुकाबला करने में संलग्न होते हैं। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि जो किशोर सोशल मीडिया पर अत्यधिक सक्रिय होते हैं, वे वास्तविक जीवन में बहुत अकेले होते हैं (वानुची, ए., फ़्लेनेरी, के.एम., और ओहनेसियन, सी.एम., 2017)[2]।

सोशल मीडिया बुलिंग से जुड़ी सामान्य समस्याएँ

दुर्भाग्य से, प्रौद्योगिकी द्वारा दी जाने वाली हर चीज़ सकारात्मक नहीं होती। बदमाशी कोई नई बात नहीं है, लेकिन सोशल मीडिया और प्रौद्योगिकी ने इसे एक नए स्तर पर पहुंचा दिया है।

[2] वानुची, ए., फ़्लेनेरी, के.एम., और ओहनेसियन, सी.एम. (2017)। उभरते वयस्कों में सोशल मीडिया का उपयोग और चिंता। जर्नल ऑफ़ अफ़ेक्टिव डिसऑर्डर, 207, 163-166।

साइबरबुलिंग एक अधिक स्थायी, सर्वव्यापी खतरा बन गया है। रोड आइलैंड राज्य के बदमाशी-विरोधी कानून और विनियमों द्वारा बदमाशी और साइबरबुलिंग को इस प्रकार परिभाषित किया गया है: "बदमाशी" की परिभाषा तब की जाती है जब एक या अधिक छात्र लिखित, मौखिक या इलेक्ट्रॉनिक अभिव्यक्तियों, शारीरिक कृत्यों, इशारों या इनमें से किसी भी संयोजन का उपयोग किसी छात्र का मज़ाक उड़ाने या उसे परेशान करने के लिए करते हैं: छात्र को चोट लगने या उनकी संपत्ति को नुकसान पहुँचाने का उचित डर पैदा करना; छात्र को शारीरिक या भावनात्मक नुकसान पहुँचाना; छात्र की संपत्ति को नुकसान पहुँचाना; या छात्र के लिए डराने वाला, धमकी देने वाला, शत्रुतापूर्ण या अपमानजनक सीखने का माहौल बनाना। शोधकर्ता, शिक्षक और माता-पिता समान रूप से किशोरों पर सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभावों के बारे में अधिक से अधिक चिंतित हो रहे हैं।

बहुत से शोधों ने किशोर विकास और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच जटिल संबंधों की जांच की है, जो डिजिटल कनेक्टिविटी के फायदे और नुकसान को उजागर करते हैं। उदाहरण के लिए, वत्रुची एट अल[3]. (2017) ने बताया कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग

[3] वानुची, ए., फ़्लेनेरी, के.एम., और ओहनेसियन, सी.एम. (2017)। उभरते वयस्कों में सोशल मीडिया का उपयोग और चिंता।

अवसादग्रस्तता के लक्षणों और अकेलेपन की भावनाओं के उच्च स्तर से जुड़ा था। इसी तरह, क्रॉस एट अल[4]. (2013) द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चला है कि सोशल फीड्स के माध्यम से बिना सोचे-समझे स्क्रॉल करने से व्यक्तिपरक कल्याण पर निष्क्रिय सोशल मीडिया के हानिकारक परिणामों को उजागर करके जीवन संतुष्टि का निम्न स्तर हो सकता है। दूसरी ओर, अन्य शोधों ने किशोर पहचान विकास के लिए सोशल मीडिया के लाभों और किशोरों की भलाई और पहचान विकास पर सोशल मीडिया के लाभों पर जोर दिया है, इस विषय पर सूक्ष्मता और व्यक्तिगत अंतरों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया के उपयोग के लाभों और कमियों दोनों को स्वीकार करके, हम बेहतर ढंग से समझ सकते हैं कि स्वस्थ विकास को बढ़ावा देते हुए डिजिटल परिदृश्य को नेविगेट करने में किशोरों का समर्थन कैसे किया जाए।

सोशल मीडिया और किशोरों में पहचान के विकास पर इसका प्रभाव

जर्नल ऑफ़ अफ़ेक्टिव डिसऑर्डर, 207, 163-166।

[4] क्रॉस, ई., वर्दुइन, पी., डेमिरलप, ई., पार्क, जे., ली, डी.एस., लिन, एन., ... और यबरा, ओ. (2013)। फेसबुक का उपयोग युवा वयस्कों में व्यक्तिपरक कल्याण में गिरावट की भविष्यवाणी करता है। प्लोस वन, 8(8), ई69841.

आधुनिक डिजिटल युग में सोशल मीडिया किशोर जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन रहा है, जिसका किशोरों के खुद को देखने और पहचान बनाने के तरीके पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। किशोरावस्था के महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण में कई क्षेत्रों जैसे कि आत्म-अवधारणा, मूल्य और सामाजिक संबंधों में बढ़ते प्रयोग और जांच की विशेषता होती है। इसे ध्यान में रखते हुए, सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग किशोरों को अपनी पहचान बनाने के साथ-साथ बाधाओं को भी बनाने का मौका देता है। डिजिटल युग में किशोरों के विकास और कल्याण को बढ़ावा देने के इच्छुक शिक्षकों, माता-पिता और विधायकों के लिए यह समझना ज़रूरी है कि सोशल मीडिया इस महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण को कैसे प्रभावित करता है (टिग्गेमैन, एम., और स्लेटर, ए., 2014) [5] **।**

पहचान जांच में सोशल मीडिया का स्थान पहचान विकास और आत्म-खोज की इच्छा जो किशोरावस्था की विशेषता है, वह लोगों द्वारा अपने बारे में बुनियादी सवालों के जवाब खोजने की कोशिश करने की विशेषता है। किशोरों के पास अपनी रुचियों का पता लगाने, समान

[5] टिग्गेमैन, एम., और स्लेटर, ए. (2014)। नेटगर्ल्स: किशोरियों में इंटरनेट, फेसबुक और शारीरिक छवि संबंधी चिंता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ईटिंग डिसऑर्डर, 47(6), 630-643।

विचारधारा वाले साथियों के साथ बातचीत करने और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने के लिए पहले से कहीं ज़्यादा संभावनाएँ हैं (सुब्रह्मण्यम और स्माहेल, 2010)। किशोर सावधानीपूर्वक चुने गए प्रोफ़ाइल, स्टेटस अपडेट और सामाजिक संपर्कों के माध्यम से अपनी पहचान तलाशते हैं; वे अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को परखते हैं और स्वीकृति के लिए अपने ऑनलाइन सोशल नेटवर्क की ओर देखते हैं (लेनहार्ट और मैडेन, 2007)। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर प्रचलित सामाजिक तुलना की संस्कृति का किशोरों की पहचान के विकास पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ सकता है। किशोर और युवा वयस्क अक्सर अपने सहपाठियों के जीवन के आदर्श चित्रण के संपर्क में आते हैं, जिसके परिणामस्वरूप नकारात्मक आत्म-धारणाएँ, अपर्याप्तता की भावनाएँ और FOMO (छूट जाने का डर) हो सकता है।

अध्ययनों के अनुसार, सोशल मीडिया पर सामाजिक तुलना अक्सर हानिकारक प्रभावों से जुड़ी होती है। सामाजिक संबंधों और साथियों की गतिशीलता पर प्रभाव: इसके अलावा, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का किशोरों के अपने साथियों को देखने और उनसे जुड़ने के तरीके पर भी प्रभाव पड़ता है, जिससे उनके सामाजिक संबंधों और साथियों की गतिशीलता की प्रकृति में बदलाव आता है। अध्ययनों से पता चलता है कि किशोरों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग

दोस्ती की गुणवत्ता में बदलाव के साथ जुड़ा हुआ है, जिसमें ऑनलाइन गतिविधियों में अत्यधिक लिप्तता कभी-कभी व्यक्तिगत बातचीत और निकटता की जगह ले लेती है (वालकेनबर्ग और पीटर, 2007)। इसके अलावा, एक सकारात्मक ऑनलाइन व्यक्तित्व को बनाए रखने के दबाव के परिणामस्वरूप कमजोर कनेक्शन विकसित हो सकते हैं और ऑनलाइन और ऑफलाइन क्षेत्रों को अलग करने वाली रेखाएँ धुंधली हो सकती हैं (बॉयड, 2014)[6]। सांस्कृतिक और प्रासंगिक विचार: यह समझना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न सांस्कृतिक और प्रासंगिक तत्व प्रभावित करते हैं कि सोशल मीडिया किशोरों की पहचान के विकास को कैसे प्रभावित करता है। पारिवारिक गतिशीलता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक मानक सभी प्रभावित कर सकते हैं कि किशोर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म और उनके द्वारा देखी जाने वाली सामग्री का उपयोग कैसे करते हैं।

ऐतिहासिक विकास

किशोरों की पहचान के निर्माण पर सोशल मीडिया के प्रभाव का ऐतिहासिक विकास

[6] बॉयड, डी. (2014)। यह जटिल है: नेटवर्क वाले किशोरों का सामाजिक जीवन। येल यूनिवर्सिटी प्रेस। बॉयड, डी., और एलिसन, एन. बी. (2008)। सोशल नेटवर्क साइट्स: परिभाषा, इतिहास और छात्रवृत्ति। जर्नल ऑफ कंप्यूटर-मीडिएटेड कम्युनिकेशन, 13(1), 210-230.

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का निर्माण: किशोरों की पहचान के निर्माण पर सोशल मीडिया का प्रभाव 20वीं सदी के उत्तरार्ध से ही मौजूद है, जब फ्रेंडस्टर (2002) और सिक्स डिग्रीज़ (1997) जैसी साइटें अस्तित्व में आईं। डिजिटल कनेक्टिविटी और आत्म-अभिव्यक्ति की नींव जो अंततः आधुनिक सोशल मीडिया परिदृश्य की विशेषता होगी, इन शुरुआती सोशल नेटवर्किंग साइटों (बॉयड और एलिसन, 2008) द्वारा बनाई गई थी।

ग्राउंडब्रेकिंग रिसर्च: 2000 के दशक में, अध्ययनों ने यह देखना शुरू किया कि सोशल मीडिया किशोरों की पहचान को कैसे प्रभावित कर सकता है। शोध ऐसे मुद्दों पर किए गए थे जैसे कि किशोर खुद को कैसे दिखाते हैं, वे ऑनलाइन अपनी पहचान कैसे बनाते हैं, और सामाजिक तुलना उनके आत्म-मूल्य और सामान्य भलाई को कैसे प्रभावित करती है (जॉइनसन, 2008[7]; वाल्केनबर्ग और पीटर, 2009[8])। फेसबुक (2004), इंस्टाग्राम (2010) और स्नैपचैट (2011) जैसी मुख्यधारा की सोशल मीडिया साइटों ने 2000 के दशक के मध्य में अभूतपूर्व वृद्धि देखी।

[7] जॉइनसन, ए. एन. (2008). लोगों को देखना, ऊपर देखना या उनके साथ बने रहना? फेसबुक के उद्देश्य और उपयोग. कंप्यूटिंग सिस्टम में मानव कारकों पर SIGCHI सम्मेलन की कार्यवाही, 1027-1036.

[8] वाल्केनबर्ग, पी.एम., और पीटर, जे. (2009)। किशोरों के लिए इंटरनेट के सामाजिक परिणाम: एक दशक का शोध। साइकोलॉजिकल साइंस में वर्तमान दिशाएँ, 18(1), 1-5।

आत्म-अभिव्यक्ति, सामाजिक संपर्क और पहचान विकास के लिए नए चैनल प्रदान करके, इन प्लेटफार्मों ने किशोरों के एक-दूसरे के साथ ऑनलाइन बातचीत करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया (बॉयड, 2014)।

संस्कृति और प्रौद्योगिकी में परिवर्तनः साथ ही, संस्कृति और प्रौद्योगिकी में परिवर्तन ने किशोरों के सोशल मीडिया के उपयोग को प्रभावित किया और इसने उनकी पहचान के निर्माण को कैसे प्रभावित किया। स्मार्टफोन और मोबाइल एप्लिकेशन के व्यापक उपयोग ने व्यक्तियों को लगातार सोशल नेटवर्किंग साइटों तक पहुंचने में सक्षम बनाया है, जिससे ऑनलाइन और ऑफलाइन पहचान के बीच का अंतर कम स्पष्ट हो गया है (लिविंगस्टोन, 2008)[9]। इसके अलावा, इंस्टाग्राम जैसे दृश्य-केंद्रित प्लेटफ़ॉर्म के उद्भव ने किशोरों की आत्म-प्रस्तुति और सामाजिक तुलना के लिए नए दृष्टिकोण लाए हैं (टिग्गेमैन[10] और स्लेटर, 2014)।

[9] लिविंगस्टोन, एस. (2008). युवा सामग्री निर्माण में जोखिम भरे अवसरों का लाभ उठाना: अंतरंगता, गोपनीयता और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए किशोरों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइटों का उपयोग.
न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, 10(3), 393-411.

[10] टिग्गेमैन, एम., और स्लेटर, ए. (2014)। नेटगर्ल्स: किशोरियों में इंटरनेट, फेसबुक और शारीरिक छवि संबंधी चिंता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ईटिंग डिसऑर्डर, 47(6), 630-643।

ISSN: 3048-5541Online

चित्र संख्या 1: किशोरों के व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव

शोध विस्तार और विविधीकरण: जैसे-जैसे किशोर संस्कृति सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक निर्भर होती गई, प्रभाव पर अध्ययन व्यापक और विविध होते गए। शिक्षाविदों ने साइबरबुलिंग, डिजिटल नागरिकता, ऑनलाइन आत्म-प्रकटीकरण जैसे विषयों की जांच की और यह भी कि सोशल मीडिया प्रभावित करने वाले लोग किशोर पहचान को कैसे प्रभावित

करते हैं (पैचिन[11] और हिंदुजा, 2015; मोरेनो एट अल., 2016)[12]। इसके अलावा, अनुदैर्ध्य शोध ने किशोरावस्था और वयस्कता के शुरुआती चरणों में पहचान के विकास पर सोशल मीडिया के उपयोग के दीर्घकालिक परिणामों पर प्रकाश डाला (ओडर्स और जेन्सेन, 2020)[13]।

साहित्य की समीक्षा

1. मैरीन टोवर द्वारा पहचान निर्माण और आत्म अभिव्यक्ति पर सोशल मीडिया का प्रभाव।

अध्ययन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के आगमन के साथ किशोरों की पहचान निर्माण के प्रतिच्छेदन की खोज करता है। जबकि एरिक एरिकसन के मनोसामाजिक विकास के चरण और जेम्स मार्सिया की पहचान की स्थितियाँ जैसे पारंपरिक सिद्धांत पहचान विकास की एक

[11] पैचिन, जे. डब्ल्यू., और हिंदुजा, एस. (2015)। स्कूल के मैदान से परे बदमाशी: साइबर बदमाशी को रोकना और उसका जवाब देना। सेज पब्लिकेशन।

[12] मोरेनो, एम. ए., जेलेनचिक, एल. ए., कॉफ़, आर., ईकॉफ़, जे., डिएर्मियर, सी., और क्रिस्टाकिस, डी.ए. (2016)। बड़े किशोरों में इंटरनेट का उपयोग और मल्टीटास्किंग: एक अनुभव नमूना दृष्टिकोण। मानव व्यवहार में कंप्यूटर, 57, 294-300।

[13] ओडर्स, सी. एल., और जेन्सेन, एम. आर. (2020)। वार्षिक शोध समीक्षा: डिजिटल युग में किशोर मानसिक स्वास्थ्य: तथ्य, भय और भविष्य की दिशाएँ। जर्नल ऑफ़ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकियाट्री, 61(3), 336-348।

आधारभूत समझ प्रदान करते हैं, सोशल मीडिया का उदय इस प्रक्रिया में एक नया आयाम पेश करता है (जॉइनसन, ए. एन. (2008) [14]।

किशोरों के पास अब एक डिजिटल स्थान है जहाँ वे विभिन्न पहचानों के साथ प्रयोग कर सकते हैं, जो अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है (मोरेनो, 2016) [15]।

भले ही अध्ययन ने व्यावहारिक जानकारी प्रदान की हो, लेकिन सोशल मीडिया पर पहचान निर्माण की जटिल प्रक्रियाओं को पूरी तरह से समझने के लिए अभी भी और अधिक शोध की आवश्यकता है, खासकर जब यह समलैंगिक युवाओं जैसी हाशिए की आबादी से संबंधित हो। भले ही अध्याय LGBTQ+ लोगों के ऑनलाइन अनुभवों पर संक्षेप में चर्चा करता है, लेकिन रंग, जातीयता और लिंग जैसे तत्वों के प्रतिच्छेदन की जाँच करके यह जाँचने के लिए आगे के अध्ययन की आवश्यकता है कि कैसे प्रतिच्छेदन पहचान विकास और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आत्म-सम्मान को प्रभावित करता है (पैचिन, जे. डब्ल्यू., 2015) [16]।

---

[14] जॉइनसन, ए. एन. (2008). लोगों को देखना, ऊपर देखना या उनके साथ बने रहना? फेसबुक के उद्देश्य और उपयोग. कंप्यूटिंग सिस्टम में मानव कारकों पर SIGCHI सम्मेलन की कार्यवाही, 1027-1036.

[15] मोरेनो, एम. ए., जेलेनचिक, एल. ए., कॉफ़, आर., ईकॉफ़, जे., डिएर्मियर, सी., और क्रिस्टाकिस, डी.ए. (2016)। बड़े किशोरों में इंटरनेट का उपयोग और मल्टीटास्किंग: एक अनुभव नमूना दृष्टिकोण। मानव व्यवहार में कंप्यूटर, 57, 294-300।

[16] पैचिन, जे. डब्ल्यू., और हिंदुजा, एस. (2015)। स्कूल के मैदान से परे बदमाशी: साइबर बदमाशी को रोकना और उसका जवाब देना। सेज पब्लिकेशन।

अध्ययन को सोशल मीडिया पर पहचान के विकास के साथ आने वाले खतरों और कठिनाइयों पर करीब से नज़र डालने से भी लाभ होगा, जैसे साइबरबुलिंग, गोपनीयता के मुद्दे, और ऑनलाइन मान्यता प्राप्त करने की इच्छा रखने वालों द्वारा की गई कार्रवाइयों का मानसिक स्वास्थ्य परिणामों पर प्रभाव।

2. **सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से किशोरों की सामाजिक पहचान पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव।**

वाला एल्सेयड द्वारा किया गया अध्ययन किशोरों की सामाजिक पहचान पर सोशल मीडिया के हानिकारक प्रभावों की जांच करता है और सामाजिक कार्य की सेटिंग में किया गया था। यह जांच करता है कि किशोरों की सामाजिक पहचान के कई पहलू - जिसमें आत्म-धारणा, पारस्परिक संबंध और सामाजिक एकीकरण शामिल हैं - सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म से कैसे प्रभावित होते हैं (अलहबाश, 2021) [17]। अध्ययन के व्यावहारिक निष्कर्षों के साथ भी, सामाजिक कार्य के संदर्भ में सोशल मीडिया किशोरों की सामाजिक पहचान को नकारात्मक रूप से

[17] अलहबाश, एस., किर्काबुरुन, के., तोसुंतास, एस. बी., और ग्रिफ़िथ, एम. डी. (2021)। TikTok की उभरती घटना: साहित्य की एक व्यवस्थित समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड एडिक्शन, 1-19।

प्रभावित करने वाले सटीक तंत्रों को पूरी तरह से समझने के लिए अभी भी और शोध की आवश्यकता है। इन प्रभावों की सूक्ष्मताओं की जांच करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है और वे अन्य आबादी और सांस्कृतिक संदर्भों में कैसे दिखाई देते हैं, भले ही अध्ययन में संभवत: कुछ सामान्य पैटर्न और रुझान पाए गए हों।

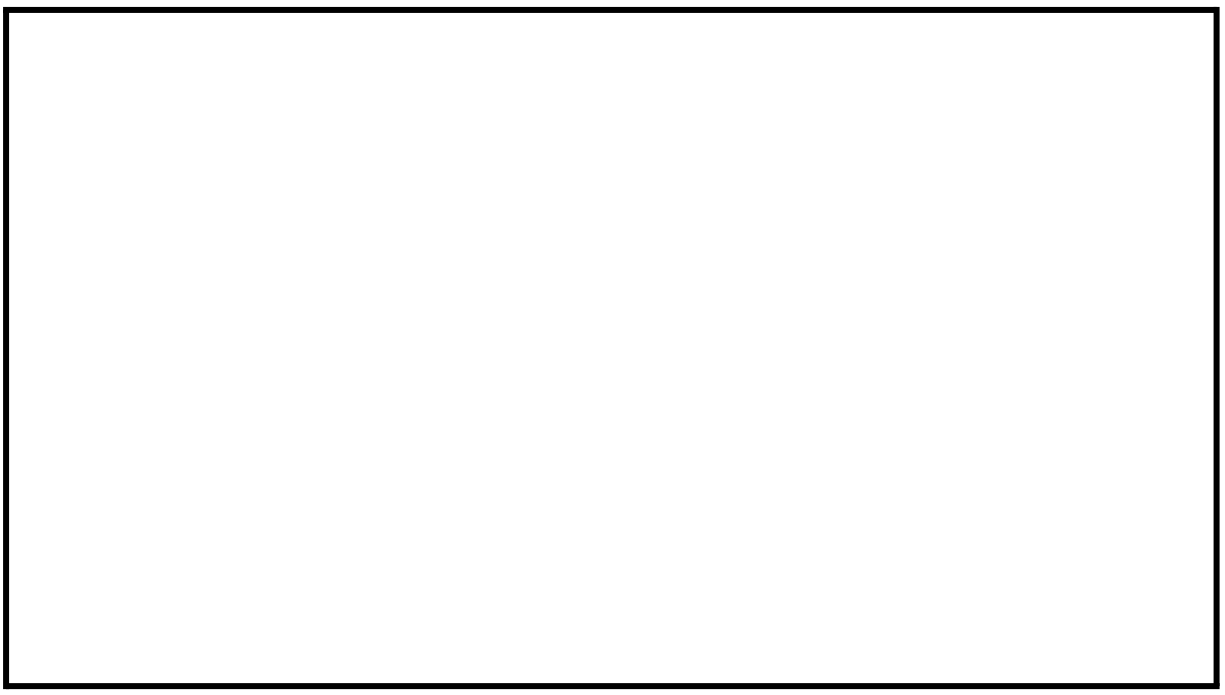

चित्र संख्या 2: युवाओं पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

3. किशोरों की पहचान निर्माण और सोशल नेटवर्क साइट उपयोग के बीच संबंध।

(ड्रोगोस, क्रिस्टिन एल. यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस एट अर्बन शैम्पेन प्रोक्वेस्ट डिसर्टेशन पब्लिशिंग, 2015.) हालांकि अध्ययनों ने व्यावहारिक जानकारी प्रदान की, फिर भी कुछ अनुत्तरित प्रश्न हैं जिनकी जांच की जानी चाहिए। सबसे पहले, भले ही अध्ययन फेसबुक के उपयोग और किशोर पहचान और आत्म-अवधारणा के तत्वों के बीच संबंध दिखाता है, लेकिन यह ज्यादातर फेसबुक पर केंद्रित है। चूंकि हर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म विभिन्न सुविधाएँ और अनुभव प्रदान कर सकता है, इसलिए भविष्य के शोध यह देख सकते हैं कि किशोरों द्वारा इन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग उनकी पहचान के निर्माण को कैसे प्रभावित करता है। दूसरा, अध्ययन फेसबुक के उपयोग के मात्रात्मक घटकों पर अधिक जोर देते हैं - जैसे कि जुड़ाव का स्तर और उपयोग की आवृत्ति - गुणात्मक लोगों की तुलना में - जैसे कि साझा की गई सामग्री और दूसरों के साथ बातचीत।

4. **डिजिटल मीडिया संदर्भ में किशोर विकास जैकलीन कई अध्ययन**

अंतराल हैं जिन्हें भरने की आवश्यकता है, भले ही लेख किशोर विकास और डिजिटल मीडिया के बीच जटिल संबंधों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करता हो। सबसे पहले, पेपर उन सटीक प्रक्रियाओं में अधिक गहराई से जा सकता है जिनके द्वारा विभिन्न डिजिटल मीडिया

प्लेटफ़ॉर्म किशोर विकास को प्रभावित करते हैं। यह बेहतर ढंग से समझने के लिए कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ऑनलाइन गेमिंग और अन्य डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म किशोरों के सामाजिक कौशल, भावनात्मक स्वास्थ्य और आत्म-अवधारणा को कैसे प्रभावित करते हैं, उदाहरण के लिए, अतिरिक्त शोध की आवश्यकता है। लेख इस बात के अधिक गहन विश्लेषण से भी लाभान्वित हो सकता है कि व्यक्तिगत विशेषताएं और पर्यावरणीय परिस्थितियाँ डिजिटल मीडिया को किशोर विकास को कैसे प्रभावित करती हैं।

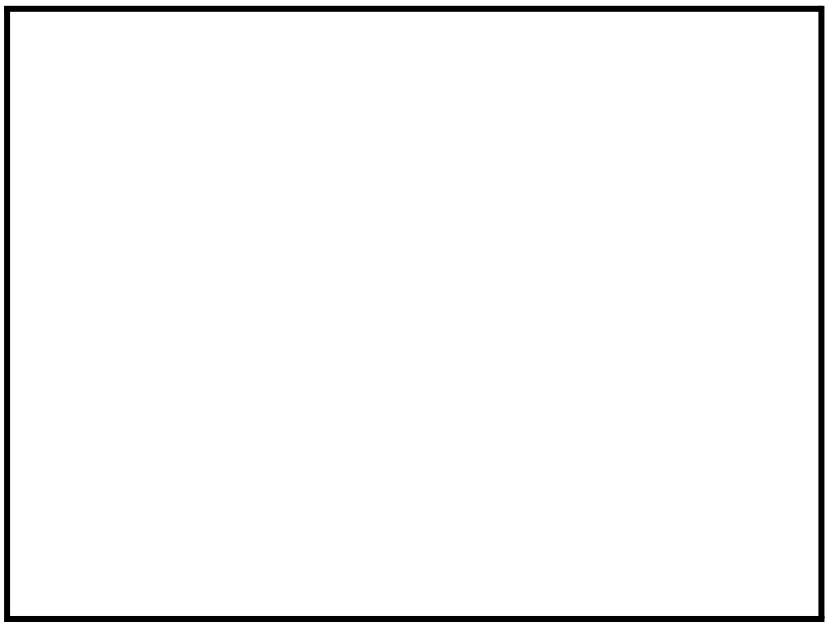

चित्र संख्या 3: दोधारी तलवार का पर्दाफाश: आज के युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव

भविष्य के शोध, उदाहरण के लिए, इस बात की जांच करनी चाहिए कि व्यक्तित्व गुण, पारिवारिक गतिशीलता और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि किशोरों की इन प्रकार के खतरों के प्रति संवेदनशीलता को कैसे प्रभावित करती है।

कार्यप्रणाली

उद्देश्य: अध्ययन में प्रारंभिक और बाद के किशोरों में किशोर पहचान निर्माण पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर शोध करने के लिए एक मात्रात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है।

उद्देश्य: किशोरों की पहचान को आकार देने में सोशल मीडिया के प्रभाव का पता लगाना।

उद्देश्य-

·सोशल मीडिया के उपयोग और किशोर पहचान निर्माण के बीच संबंधों की जांच करना।

·एसएमएएस और डीआईडीएस स्केल का उपयोग करके किशोरों के बीच पहचान विकास की तुलना करना।

परिकल्पना: सोशल मीडिया के उपयोग (एसएमएएस स्केल द्वारा मापा गया) और किशोर पहचान अन्वेषण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

ISSN: 3048-5541Online

किशोरों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग और पहचान अन्वेषण के बीच एक सकारात्मक संबंध मौजूद है।

किशोरों के बीच डिजिटल पहचान विकास का आकलन करने में एसएमएएस स्कोर डीआईडीएस स्कोर से काफी भिन्न होते हैं।

चर

1. आश्रित चर- किशोर पहचान निर्माण (डीआईडीएस का उपयोग करके मापा गया)।

2. स्वतंत्र चर- सोशल मीडिया का उपयोग (SMAS का उपयोग करके मापा गया)।

नमूना डेटा 13 से 22 वर्ष की आयु के पुरुष और महिला किशोरों से एकत्र किया जाएगा।

समावेशन मानदंड

13 से 22 वर्ष की आयु के किशोर

पुरुष और महिला किशोर दोनों

उपकरण

1) SMAS स्केल (सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल) जिसे अर्सलान और किरिक ने विकसित किया है

2) DIDS स्केल (पहचान विकास स्केल के आयाम) (मैस्ट्रोथियोडोरोस, एस., और मोटी-स्टेफनीडी, एफ., 2017) [18]

सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल (SMAS)

इस स्केल को अर्सलान और किरिक ने विकसित किया है। इस स्केल में 25 आइटम हैं जो छात्रों में सोशल मीडिया की लत के स्तर को मापते हैं।

इसे 5-पॉइंट लिकर्ट स्केल पर मापा जाता है, जिसमें 1 दृढ़ता से सहमत होने के लिए और 5 दृढ़ता से असहमत होने के लिए होता है। यह स्केल शोधकर्ताओं को व्यवहारिक लत की जांच करके सोशल मीडिया की लत के संभावित मामलों की पहचान करने में मदद करता है।

[18] मैस्ट्रोथियोडोरोस, एस., और मोटी-स्टेफनीडी, एफ. (2017)। पहचान विकास पैमाने के आयाम (DIDS): ग्रीक किशोरों में अनुदैर्ध्य माप अपरिवर्तनशीलता का एक परीक्षण। यूरोपियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 14(5), 605-617।

प्रश्नावली में ऐसे प्रश्न शामिल हैं जैसे कि 'मैं फेसबुक और ट्विटर के माध्यम से नए दोस्त बनाता हूँ।' या 'मुझे लगता है कि जब मैं फेसबुक का उपयोग नहीं करता हूँ तो मैं अपने दोस्तों के साथ खराब संचार करता हूँ।'

पहचान विकास पैमाने के आयाम (DIDS)

पहचान विकास पैमाने के आयाम (DIDS) एक 25-आइटम उपकरण है जिसे पहचान विकास के पाँच पहलुओं का आकलन करने के लिए विकसित किया गया है:

- **चौड़ाई में अन्वेषण**
- **गहराई में अन्वेषण**
- **प्रतिबद्धताओं के साथ पहचान**
- **चिंतनशील अन्वेषण**
- **प्रतिबद्धता बनाना**

इसे लुइक्स और सहकर्मियों द्वारा विकसित किया गया था और इसका उद्देश्य यह देखना है कि किशोर अन्वेषण और प्रतिबद्धता के माध्यम से पहचान बनाते हैं।

इसे 5-पॉइंट लिकर्ट स्केल पर मापा जाता है जिसमें 1 दृढ़ता से सहमत होने के लिए और 5 दृढ़ता से असहमत होने के लिए होता है।

-प्रक्रिया

इस अध्ययन के लिए प्रतिभागियों को Google फ़ॉर्म पर किए गए सर्वेक्षण के साथ अंतिम रूप दिया गया।

समावेशन मानदंडों में 13 से 22 वर्ष (वयस्कता के अंत तक) के किशोर शामिल थे जो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। लाइकर्ट स्केल का उपयोग करके Google फ़ॉर्म पर एक सामान्य सर्वेक्षण किया गया जिसमें 74 लोगों ने भाग लिया। डेटा का विश्लेषण करने और सोशल मीडिया की लत और पहचान आयामों के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध विश्लेषण और रैखिक प्रतिगमन का उपयोग किया गया। प्रतिभागियों को एक स्व-रिपोर्ट प्रश्नावली दी गई। प्रश्नावली में दो खंड शामिल थे:

ISSN: 3048-5541Online

a. सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल (SMAS): प्रतिभागियों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उनकी लत की सीमा का आकलन करने के लिए अर्सलान और किरिक द्वारा विकसित SMAS पर आइटमों का जवाब देने के लिए कहा गया था। इस स्केल में 25 आइटम शामिल हैं, जिन्हें लाइकर्ट स्केल पर 1 (पूरी तरह सहमत) से लेकर 5 (पूरी तरह असहमत) तक मापा गया है।

b. पहचान विकास पैमाने के आयाम: प्रतिभागियों की पहचान विकास का मूल्यांकन पहचान विकास पैमाने के आयामों का उपयोग करके किया गया, जिसमें पाँच आयाम शामिल हैं: गहराई- गहराई से तात्पर्य उस सीमा से है जिस तक एक व्यक्ति अपनी पहचान के विभिन्न पहलुओं की गहन और व्यापक खोज में लगा हुआ है। चौड़ाई- चौड़ाई पहचान से संबंधित अनुभवों और भूमिकाओं की विविधता और सीमा को दर्शाती है जिसे एक व्यक्ति ने खोजा है।

चिंतनशील- चिंतनशील सोच उस सीमा को दर्शाती है जिस तक एक व्यक्ति अपने पिछले अनुभवों और भविष्य की पहचान की संभावनाओं के बारे में आत्मनिरीक्षण और चिंतनशील चिंतन में लगा हुआ है।

ISSN: 3048-5541Online

प्रतिबद्धता- प्रतिबद्धता यह मापती है कि किसी व्यक्ति ने अपनी पहचान के विभिन्न पहलुओं के बारे में किस हद तक दृढ़ और स्थायी विकल्प बनाए हैं।

प्रतिबद्धता के साथ पहचान- प्रतिबद्धता के साथ पहचान यह दर्शाती है कि एक व्यक्ति अपनी प्रतिबद्ध पहचान के विकल्पों को किस हद तक अपने आत्म-बोध में आत्मसात और एकीकृत करता है। इस पैमाने में 25 आइटम शामिल हैं, जिन्हें लिकर्ट पैमाने पर मापा जाता है, जो 1 (पूरी तरह से सहमत) से लेकर 5 (पूरी तरह से असहमत) तक होता है। सर्वेक्षण 30 दिनों की अवधि में आयोजित किया गया था, जिसके दौरान प्रतिभागियों ने अपनी सुविधानुसार प्रश्नावली पूरी की। सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए, प्रतिभागियों को ईमानदार और विचारशील प्रतिक्रियाएँ देने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

परिणाम

जनसांख्यिकी विशेषताएँ कुल प्रतिभागियों में सबसे अधिक अनुपात (59.5%) 18-21 वर्ष की आयु के पुरुष थे।

इसके बाद 18-21 वर्ष की आयु की महिलाएँ (40.5%) थीं। अधिकांश प्रतिभागियों ने सोशल मीडिया पर प्रतिदिन 1-3 घंटे बिताए (40.5%), जबकि 85.1% ने इंस्टाग्राम पर सबसे अधिक समय बिताया।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया के उपयोग को सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल का उपयोग करके समझाया गया है।

SMAS (सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल):

पहचान विकास पहचान विकास को DIDS स्केल (पहचान विकास स्केल के आयाम) का उपयोग करके समझाया गया है।

तालिका संख्या 1

औसत और मानक विचलन (SD) प्रदर्शित करती है: सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल और पहचान विकास स्केल के घटक।

वर्णनात्मक आँकड़े

माप	**माध्य**	**मानक विचलन**	**N**
सैम्स	67.7703	14.66946	74
गहराई	10.6622	3.84735	74
चौड़ाई	10.8243	3.83694	74
चिंतनशील	13.7432	4.36066	74
प्रतिबद्धता	10.7973	3.76712	74
पहचान प्रतिबद्धता	12.8514	3.46285	74

यह तालिका कई चरों के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी दर्शाती है, जिनमें से प्रत्येक को 74 के नमूना आकार (N) के आधार पर एक अलग पैमाने पर मापा जाता है। औसत SAMS स्कोर 14.66946 के मानक विचलन के साथ 67.7703 है। यह सुझाव देता है कि, औसतन, प्रतिभागियों

ने SAMS पैमाने पर लगभग 67.77 स्कोर किया, जो प्रतिभागियों के बीच सोशल मीडिया की लत के मध्यम स्तर को दर्शाता है। यहाँ स्कोर लगभग 14.67 अंकों से भिन्न हैं।

तालिका संख्या 2

सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल और पहचान विकास स्केल के डोमेन के बीच सहसंबंध गुणांक प्रदर्शित करती है।

उपाय	गहराई	चौड़ाई	चिंतनशील	प्रतिबद्धता	पहचान प्रतिबद्धता
SAMS	.137 .	286*	.342**	.139	.321**

सहसंबंध गुणांक: तालिका में सहसंबंध गुणांक SAMS और पहचान विकास स्केल के प्रत्येक डोमेन के बीच रैखिक संबंधों की ताकत और दिशा को इंगित करते हैं।

- मान .137 से .342** तक हैं। .137 SAMS और DEPTH के बीच एक कमज़ोर सकारात्मक सहसंबंध का सुझाव देता है।

- **.286* SAMS और BREADTH के बीच एक मध्यम रूप से मजबूत सकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है।**
- **.342** SAMS और RUMINATIVE के बीच एक मध्यम रूप से मजबूत सकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है।**
- **.139 SAMS और COMMITMENT के बीच एक कमज़ोर सकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है।**
- **.321** SAMS और COMMITMENT के बीच एक मध्यम रूप से मजबूत सकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है।**

- **सहसंबंध विश्लेषण ने SAMS और तीन DIDS घटकों: BREADTH, RUMINATIVE और COMMITMENT के साथ पहचान के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंधों का खुलासा किया।**

व्याख्या

निष्कर्ष किशोरों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग और पहचान विकास के बीच साक्ष्य साबित करते हैं। परिणाम बताते हैं कि सोशल मीडिया की लत, जैसा कि SAMS द्वारा मापा जाता है, किशोरों के बीच व्यापक पहचान अन्वेषण (BREADTH), पहचान के बारे में बढ़ी हुई आत्मनिरीक्षण सोच (RUMINATIVE) और प्रतिबद्ध पहचान विकल्पों (प्रतिबद्धता के साथ पहचान) के साथ मजबूत पहचान के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई है। ये निष्कर्ष इस परिकल्पना का समर्थन करते हैं कि सोशल मीडिया के उपयोग के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है, जैसा कि SAMS द्वारा मापा जाता है, और पहचान अन्वेषण एक सकारात्मक सहसंबंध का मतलब है कि जैसे-जैसे SAMS पर स्कोर बढ़ता है, किशोरों के बीच पहचान विकास पैमाने के संबंधित डोमेन पर स्कोर भी बढ़ने लगते हैं। सहसंबंध की ताकत का मूल्यांकन सहसंबंध गुणांक मूल्य के आधार पर किया जाता है, जहाँ उच्च मूल्य एक मजबूत संबंध का संकेत देते हैं। गहराई यह दर्शाती है कि व्यक्ति किस हद तक पहचान-संबंधी अनुभवों के अर्थ और महत्व का पता लगाते हैं। SAMS (.137) के साथ इसका कमजोर सकारात्मक सहसंबंध बताता है कि सोशल मीडिया की लत का पहचान विकास के इस पहलू पर सीमित प्रभाव हो सकता है। चौड़ाई पहचान अन्वेषण की सीमा और विविधता का प्रतिनिधित्व करती है। SAMS

(.286*) के साथ इसका मध्यम सकारात्मक सहसंबंध यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया की लत के उच्च स्तर पहचान की व्यापक खोज से जुड़े हैं। RUMINATIVE का तात्पर्य किसी की पहचान के बारे में आत्मनिरीक्षण की डिग्री से है। SAMS (.342**) के साथ इसका मध्यम रूप से मजबूत सकारात्मक सहसंबंध यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया की लत पहचान के बारे में आत्मनिरीक्षण को बढ़ाने में योगदान दे सकती है।

प्रतिबद्धता यह मापती है कि व्यक्तियों ने पहचान से संबंधित विकल्पों के लिए किस हद तक दृढ़ प्रतिबद्धताएँ की हैं।

SAMS (.139) के साथ इसका कमज़ोर सकारात्मक सहसंबंध यह बताता है कि सोशल मीडिया की लत का पहचान विकल्पों के प्रति प्रतिबद्धता पर सीमित प्रभाव हो सकता है। प्रतिबद्धता के साथ पहचान प्रतिबद्ध पहचान विकल्पों के साथ व्यक्तियों की पहचान की ताकत का आकलन करती है। SAMS (.321**) के साथ इसका मध्यम रूप से मज़बूत सकारात्मक सहसंबंध यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया की लत का उच्च स्तर प्रतिबद्ध पहचान विकल्पों के साथ मज़बूत पहचान से जुड़ा है। कुल मिलाकर, परिणाम बताते हैं कि SAMS द्वारा मापी गई सोशल

मीडिया की लत किशोरों में पहचान विकास के विभिन्न आयामों से जुड़ी है। विशेष रूप से, यह पहचान अन्वेषण की चौड़ाई, पहचान के बारे में आत्मनिरीक्षण सोच और प्रतिबद्ध पहचान विकल्पों के साथ पहचान जैसे पहलुओं से सकारात्मक रूप से सहसंबंधित है। ये निष्कर्ष इस परिकल्पना के अनुरूप हैं कि किशोरों में सोशल मीडिया के उपयोग और पहचान अन्वेषण के बीच सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है।

तालिका संख्या 3

घंटे (प्रति दिन)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
0-1 घंटे	10	10%
1-2 घंटे	25	25%
2-3 घंटे	30	30%
3+ घंटे	35	35%

Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5541Online

विश्लेषण:

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि अधिकांश युवा (35%) प्रतिदिन 3 घंटे से अधिक समय सोशल मीडिया पर बिताते हैं। इसके बाद 2-3 घंटे की श्रेणी में 30% युवा आते हैं। केवल 10% युवा ऐसे हैं जो सोशल मीडिया पर 1 घंटे से कम समय बिताते हैं। यह डेटा यह इंगित करता है कि सोशल मीडिया का उपयोग युवाओं के दैनिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

व्याख्या:

सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह युवाओं की पहचान निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ज्यादा समय सोशल मीडिया पर बिताने से उनकी व्यक्तिगत पहचान, रुचियां और सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आने की संभावना बढ़ जाती है।

तालिका संख्या 4

विकल्प	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
हां, मेरी पहचान बदलती है	40	40%
नहीं, मेरी पहचान स्थिर रहती है	60	60%

Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5541Online

विश्लेषण:

40% उत्तरदाता मानते हैं कि सोशल मीडिया पर उनकी पहचान में बदलाव आता है, जबकि 60% का मानना है कि उनकी पहचान स्थिर रहती है। यह दर्शाता है कि लगभग आधे उत्तरदाताओं के लिए सोशल मीडिया की वजह से उनकी पहचान में कुछ न कुछ बदलाव आता है।

व्याख्या:

ISSN: 3048-5541Online

यह आंकड़ा बताता है कि सोशल मीडिया का उपयोग केवल एक संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह कई युवाओं के लिए अपनी पहचान को बदलने या फिर से परिभाषित करने का मंच भी है। कुछ लोग अपनी वास्तविक पहचान को स्थिर रखते हैं, जबकि अन्य लोग इसे सोशल मीडिया पर बदलने का प्रयास करते हैं, जो डिजिटल पहचान निर्माण की ओर इशारा करता है।

तालिका संख्या 5

विकल्प	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
सकारात्मक प्रभाव	45	45%
नकारात्मक प्रभाव	25	25%
कोई प्रभाव नहीं	30	30%

Writers Crew International Research Journal

ISSN: 3048-5541Online

विश्लेषण:

45% उत्तरदाता मानते हैं कि सोशल मीडिया का उनके आत्म-सम्मान पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। 25% उत्तरदाता इसे नकारात्मक मानते हैं, जबकि 30% का मानना है कि सोशल मीडिया का उनके आत्म-सम्मान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

व्याख्या:

यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया के उपयोग का प्रभाव युवाओं के आत्म-सम्मान पर मिश्रित है। सकारात्मक प्रभाव वाले युवा संभवतः सोशल मीडिया पर अधिक समर्थन और स्वीकृति का अनुभव करते हैं, जिससे उनका आत्म-सम्मान बढ़ता है। वहीं, नकारात्मक प्रभाव वाले युवा अपने आप की तुलना दूसरों से करने या नकारात्मक टिप्पणियों से प्रभावित होते हैं। वहीं 30% उत्तरदाताओं के लिए सोशल मीडिया का आत्म-सम्मान पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं दिखता, जो यह दर्शाता है कि सभी युवा सोशल मीडिया को अपने व्यक्तिगत मूल्यांकन के लिए प्राथमिक माध्यम नहीं मानते।

संदर्भ सूची

1. https://dictionary.apa.org/adolescence

2. किशोरों की सामाजिक पहचान पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से वाला एल्सेयेड *मानविकी और विज्ञान महाविद्यालय, अजमान विश्वविद्यालय, अजमान, संयुक्त अरब अमीरात।

3. अलहबाश, एस., किर्काबुरुन, के., तोसुंतास, एस. बी., और ग्रिफ़िथ, एम. डी. (2021)। TikTok की उभरती घटना: साहित्य की एक व्यवस्थित समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड एडिक्शन, 1-19।

4. बॉयड, डी. (2014)। यह जटिल है: नेटवर्क वाले किशोरों का सामाजिक जीवन।

येल यूनिवर्सिटी प्रेस। बॉयड, डी., और एलिसन, एन. बी. (2008)। सोशल नेटवर्क साइट्स: परिभाषा, इतिहास और छात्रवृत्ति। जर्नल ऑफ कंप्यूटर-मीडिएटेड कम्युनिकेशन, 13(1), 210-230.

5. जॉइनसन, ए. एन. (2008). लोगों को देखना, ऊपर देखना या उनके साथ बने रहना? फेसबुक के उद्देश्य और उपयोग. कंप्यूटिंग सिस्टम में मानव कारकों पर SIGCHI सम्मेलन की कार्यवाही, 1027-1036.

6. लिविंगस्टोन, एस. (2008). युवा सामग्री निर्माण में जोखिम भरे अवसरों का लाभ उठाना: अंतरंगता, गोपनीयता और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए किशोरों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइटों का उपयोग.

न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, 10(3), 393-411.

लिविंगस्टोन, एस., और हेलस्पर, ई. (2007). डिजिटल समावेशन में क्रमिकता: बच्चे, युवा लोग और डिजिटल विभाजन. न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, 9(4), 671-696.

7. मोरेनो, एम. ए., जेलेनचिक, एल. ए., कॉफ़, आर., ईकॉफ़, जे., डिएर्मियर, सी., और क्रिस्टाकिस, डी.ए. (2016)। बड़े किशोरों में इंटरनेट का उपयोग और मल्टीटास्किंग: एक अनुभव नमूना दृष्टिकोण। मानव व्यवहार में कंप्यूटर, 57, 294-300।

8. ओडर्स, सी. एल., और जेन्सेन, एम. आर. (2020)। वार्षिक शोध समीक्षा: डिजिटल युग में किशोर मानसिक स्वास्थ्य: तथ्य, भय और भविष्य की दिशाएँ। जर्नल ऑफ़ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकियाट्री, 61(3), 336-348।

पैचिन, जे. डब्ल्यू., और हिंदुजा, एस. (2015)। स्कूल के मैदान से परे बदमाशी: साइबर बदमाशी को रोकना और उसका जवाब देना। सेज पब्लिकेशन।

9. टिग्गेमैन, एम., और स्लेटर, ए. (2014)। नेटगर्ल्स: किशोरियों में इंटरनेट, फेसबुक और शारीरिक छवि संबंधी चिंता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ईटिंग डिसऑर्डर, 47(6), 630-643।

10. वाल्केनबर्ग, पी.एम., और पीटर, जे. (2009)। किशोरों के लिए इंटरनेट के सामाजिक परिणाम:

एक दशक का शोध। साइकोलॉजिकल साइंस में वर्तमान दिशाएँ, 18(1), 1-5।

11. वानुची, ए., फ़्लेनेरी, के.एम., और ओहनेसियन, सी.एम. (2017)। उभरते वयस्कों में सोशल मीडिया का उपयोग और चिंता। जर्नल ऑफ़ अफ़ेक्टिव डिसऑर्डर, 207, 163-166।

12. क्रॉस, ई., वर्दुइन, पी., डेमिरलप, ई., पार्क, जे., ली, डी.एस., लिन, एन., और यबरा, ओ. (2013)। फेसबुक का उपयोग युवा वयस्कों में व्यक्तिपरक कल्याण में गिरावट की भविष्यवाणी करता है। प्लोस वन, 8(8), ई 69841.

13. ली, एस. वाई., किम, एच., किम, जे. एच., किम, वाई. जे., और हान, एस. (2018)। सोशल मीडिया का उपयोग, शरीर की छवि और मनोवैज्ञानिक कल्याण: कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका की क्रॉस-सांस्कृतिक तुलना। जर्नल ऑफ हेल्थ कम्युनिकेशन, 23(10-11), 870-877।

14. मैस्ट्रोथियोडोरोस, एस., और मोटी-स्टेफनीडी, एफ. (2017)। पहचान विकास पैमाने के आयाम (DIDS): ग्रीक किशोरों में अनुदैर्ध्य माप अपरिवर्तनशीलता का एक परीक्षण। यूरोपियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 14(5), 605-617।